

Abhineet

30 सितम्बर 2002 * 01:12:00 घंटे *Guna, India

सौजन्य

Pure Universe

www.pureuniverse.in
info@pureuniverse.in

दिनांक: 3 नवम्बर 2021

Abhineet

जन्म विवरण

लिंग	: पुरुष
जन्म दिन	: 30 सितम्बर 2002
जन्म वार	: सोमवार
जन्म समय	: 01:12:00 घंटे
इष्टकाल	: 47:21:28 घटी
जन्म स्थान	: Guna
देश	: India

अक्षांश	: 24उ39'00
रेखांश	: 77पू19'00
समयक्षेत्र	: -05:30:00 घंटे
समय संशोधन	: 00:00:00 घंटे
जी.एम.टी. समय	: 19:42:00 घंटे
स्थानीय समय संस्कार	: -00:20:44 घंटे
स्थानीय समय	: 00:51:16 घंटे
सांपातिक काल	: 25:24:50 घंटे
सनसाइन (सायन सूर्य)	: तुला
लग्न राशि	: कर्क 04:59:59

पारिवारिक विवरण

दादा का नाम	:
पिता का नाम	:
माता का नाम	:
जाति	:
गोत्र	:

अवकहडा चक्र

1. वर्ण	: शूद्र
2. वश्य	: मानव
3. नक्षत्र - चरण	: आर्द्रा - 3
4. योनि	: श्वान
5. चन्द्र राशि स्वामी	: बुध
6. गण	: मनुष्य
7. चन्द्र राशि	: मिथुन
8. नाड़ी	: आदि
वर्ग	: मार्जार
युञ्जा	: मध्य
हंसक (तत्व)	: वायु
नामाक्षर	: ऊ
राशि पाया	: लौह
नक्षत्र पाया	: चाँदी

जन्मकालीन पंचांगादि

चैत्रादि विधि	
विक्रम संवत्	: 2059
मास	: आश्विन
कार्तिकादि विधि	
विक्रम संवत्	: 2058
मास	: भाद्रपद
शक संवत्	: 1924
सूर्य अयन/गोल	: दक्षिणायन/दक्षिण
ऋतु	: शरद
पक्ष	: कृष्ण
ज्योतिषिय वार	: रविवार

सूर्योदयी तिथि	: कृष्ण सप्तमी
तिथि समाप्तिकाल	: 10:17:15 घंटे
	: 10:04:34 घटी
जन्मकालीन तिथि	: कृष्ण अष्टमी

सूर्योदयी नक्षत्र	: मृगशिरा
नक्षत्र समाप्तिकाल	: 11:34:57 घंटे
	: 13:18:50 घटी
जन्मकालीन नक्षत्र	: आर्द्रा

सूर्योदयी योग	: व्यतिपात
योग समाप्तिकाल	: 07:59:22 घंटे
	: 4:19:54 घटी
जन्मकालीन योग	: वरियान्

सूर्योदयी करण	: बव
करण समाप्तिकाल	: 10:17:15 घंटे
	: 10:04:34 घटी
जन्मकालीन करण	: कौलव

सूर्योदय समय	: 06:15:25 घंटे
अंश	: कन्या 11:49:10
सूर्यास्त समय	: 18:06:34 घंटे
अंश	: कन्या 12:18:12
आगामी सूर्योदय	: सोमवार 06:15:48 घंटे

चन्द्र का नक्षत्र प्रवेश	: 29 सितम्बर 02 11:34:57
चन्द्र का नक्षत्र निकास	: 30 सितम्बर 02 12:28:58
भयात	: 34:02:37 घटी
भभोग	: 62:15:01 घटी
जन्मकालीन दशा	: राहु-बुध-गुरु
दशा भोग्यकाल	: राहु 8व.-2मा.-22दि.
अयनांश	: -23:53:27 लहरी



30 सितम्बर 2002 * सोमवार * 01:12:00 घंटे

		रा 17:02	श 05:04 चं 13:54
			ल 04:59 गु 18:02
			मं 25:58
	के 17:02	शु 19:33	बु(व) 08:23 सू 12:35

चंद्र कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

नवांश कुण्डली

बु(व) शु	सू		रा
चं			
			ल
के गु	श मं		

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	रा. स्वा.	न. स्वा.	उप स्वा.	उप स्वा.	शुभा- शुभ	षड्बल
लग्न		कर्क	04:59:59		पुष्य	1	चं	श	श	रा		
सूर्य		कन्या	12:35:41	00:58:57	हस्त	1	बु	चं	रा	श	शत्रु	0.83
चन्द्र		मिथुन	13:54:20	12:52:02	आर्द्रा	3	बु	रा	बु	गु	अतिमित्र	0.97
मंगल	(अ)	सिंह	25:58:04	00:38:12	पूर्वाफाल्गुनी	4	सू	शु	के	शु	अतिमित्र	1.18
बुध	(व)(अ)	कन्या	08:23:16	-01:00:47	उत्तराफाल्गुनी	4	बु	सू	शु	चं	उच्च	1.14
गुरु		कर्क	18:02:02	00:10:07	आश्लेषा	1	चं	बु	बु	गु	उच्च	1.41
शुक्र		तुला	19:33:20	00:22:32	स्वाति	4	शु	रा	मं	श	स्वराशि	1.46
शनि		मिथुन	05:04:03	00:01:18	मृगशिरा	4	बु	मं	सू	रा	अतिमित्र	1.13
राहु		वृष	17:02:50	-00:00:07	रोहिणी	3	शु	चं	श	चं	उच्च	
केतु		वृश्चिक	17:02:50	-00:00:07	ज्येष्ठा	1	मं	बु	बु	शु	उच्च	



चन्द्र कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

नवांश

बु(व) शु	सू		रा
चं			
			ल
के गु	श मं		

भाव (श्रीपति)

			श चं रा
			ल गु
के	शु		बु(व) सू मं

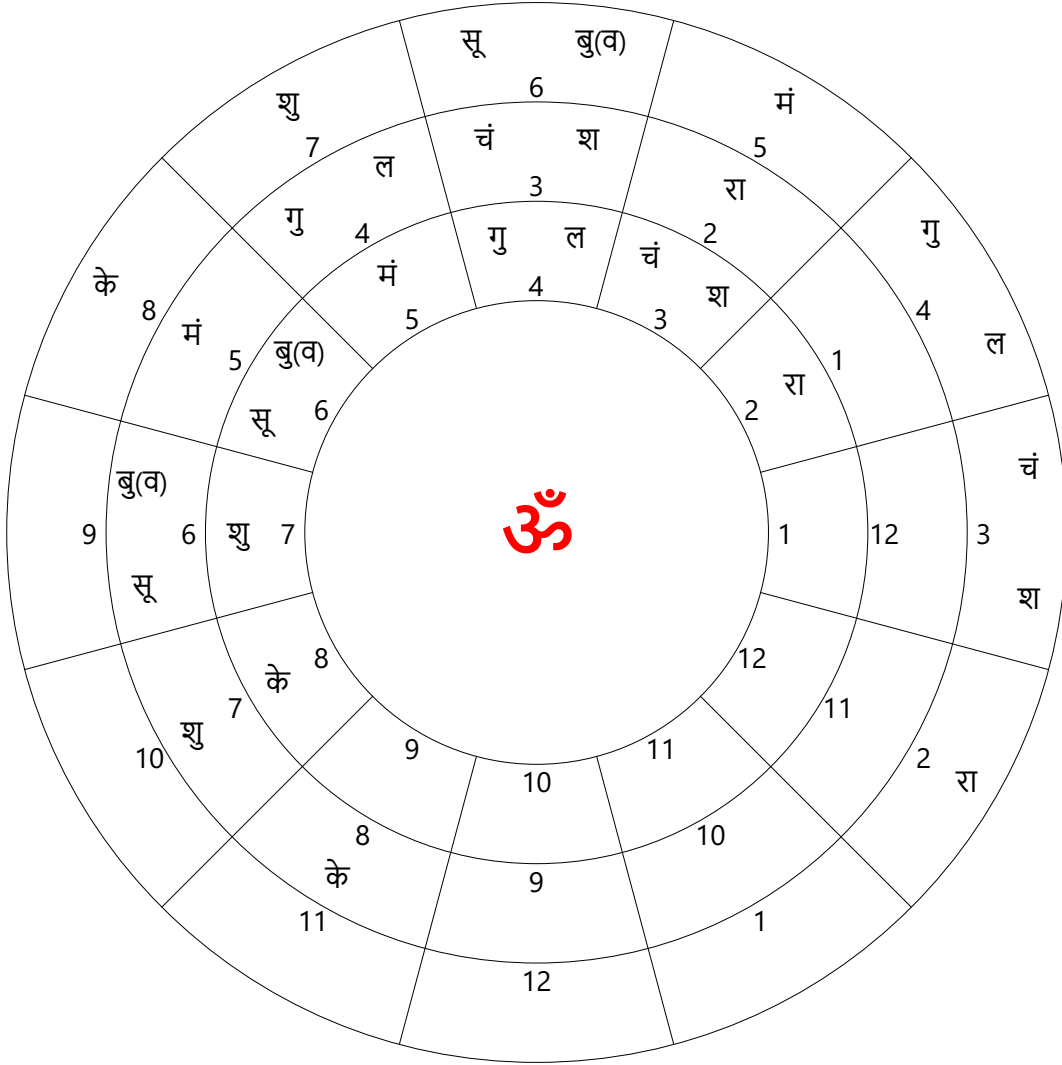
भाव स्पष्ट - श्रीपति विधि

भाव	भाव आरम्भ	भाव मध्य	भाव अन्त
प्रथम भाव	मिथुन 19:00:19	कर्क 04:59:59	कर्क 19:00:19
द्वितीय भाव	कर्क 19:00:19	सिंह 03:00:40	सिंह 17:01:01
तृतीय भाव	सिंह 17:01:01	कन्या 01:01:22	कन्या 15:01:43
चतुर्थ भाव	कन्या 15:01:43	कन्या 29:02:04	तुला 15:01:43
पंचम भाव	तुला 15:01:43	वृश्चिक 01:01:22	वृश्चिक 17:01:01
षष्ठ भाव	वृश्चिक 17:01:01	धनु 03:00:40	धनु 19:00:19
सप्तम भाव	धनु 19:00:19	मकर 04:59:59	मकर 19:00:19
अष्टम भाव	मकर 19:00:19	कुंभ 03:00:40	कुंभ 17:01:01
नवम भाव	कुंभ 17:01:01	मीन 01:01:22	मीन 15:01:43
दशम भाव	मीन 15:01:43	मीन 29:02:04	मेष 15:01:43
एकादश भाव	मेष 15:01:43	वृष 01:01:22	वृष 17:01:01
द्वादश भाव	वृष 17:01:01	मिथुन 03:00:40	मिथुन 19:00:19



सुदर्शन चक्र

बाह्य वृत्त : सूर्य कुण्डली
मध्य वृत्त : चन्द्र कुण्डली
आन्तरिक वृत्त : जन्म कुण्डली



सुदर्शन चक्र के बाह्य वृत्त में सूर्य कुण्डली, मध्य वृत्त में चन्द्र कुण्डली व आन्तरिक वृत्त में जन्म कुण्डली बना कर तीनों कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों का एक साथ विश्लेषण किया जाता है।



उपग्रह

गुलिकादि उपग्रह समूह

जन्म मध्य रात्रि से सूर्योदय के बीच * सूर्योदय-सूर्यास्त : 06:15-18:06 * जन्मवार : रविवार

उपग्रह	स्वामी	उपग्रह की अवधि	आरम्भ (पराशर विधि)				अन्त (कालिदास विधि)			
			राशि	अंश	नक्षत्र	पद	राशि	अंश	नक्षत्र	पद
कालवेला	सू	22:40-00:11	मिथुन	01:05:26	मृगशिरा	3	मिथुन	21:42:56	पुनर्वसु	1
परिधि	चं	00:11-01:42	मिथुन	21:42:56	पुनर्वसु	1	कर्क	11:35:48	पुष्य	3
मृत्यु	मं	01:42-03:13	कर्क	11:35:48	पुष्य	3	सिंह	01:35:57	मघा	1
अर्धप्रहर	बु	03:13-04:44	सिंह	01:35:57	मघा	1	सिंह	22:03:23	पूर्वाफाल्गुनी	3
यमकण्टक	गु	18:06-19:37	मीन	12:18:12	उ.भाद्रपद	3	मेष	12:10:44	अश्विनी	4
कोदण्ड	शु	19:37-21:08	मेष	12:10:44	अश्विनी	4	वृष	08:23:24	कृत्तिका	4
गुलिक	श	21:08-22:40	वृष	08:23:24	कृत्तिका	4	मिथुन	01:05:26	मृगशिरा	3

धूमादि उपग्रह समूह

उपग्रह	स्वामी	राशि	अंश	नक्षत्र	पद
धूम	मं	मकर	25:55:41	धनिष्ठा	1
व्यतिपात	रा	मिथुन	04:04:19	मृगशिरा	4
परिवेश	चं	धनु	04:04:19	मूल	2
इन्द्रचाप	शु	कर्क	25:55:41	आश्लेषा	3
उपकेतु	के	सिंह	12:35:41	मघा	4

उपग्रह

यम	कोदंड	गुलिक	काल परिधि व्यति
			मृत्युचाप
धूम			अर्धप्रहर उपकेतु
परिवेश			

अन्य विशेष लग्न व गणनाएं

भाव लग्न	मिथुन	25:57:59	योगी बिन्दु	29:50:01 कुंभ
होरा लग्न	मेष	10:06:47	योगी	गु
घटिका लग्न	सिंह	22:33:13	अवयोगी/अन्य योगी	सू/श
इन्दु लग्न	मेष	15:00:00	64वां नवांश (चन्द्र/लग्न)	वृष/वृश्चिक
बीज स्फुट	कर्क	20:11:03	22वां द्रेष्काण (लग्न/चन्द्र)	कुंभ/वृष
जन्म कुण्डली/नवांश	सम/सम 0 प्रतिशत (अशुभ)		सर्प द्रेष्काण	गुरुकेतु



जन्म दिन : 30 सितम्बर 2002, सोमवार
 जन्म समय : 01:12:00 घंटे
 जन्म स्थान : Guna, Madhya Pradesh, India

रेखांश/अक्षांश : 77°19'00" 24°39'00"
 समयक्षेत्र : -05:30:00 घंटे
 समय संशोधन : 00:00:00 घंटे

जन्म कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

चंद्र कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

सूर्य कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

श्रीपति भाव कुण्डली

			श चं रा
			ल गु
			मं
के	शु		बु(व) सू मं

सम भाव कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू मं

के.पी. भाव कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

आरुढ़ लग्न कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

कारकांश (जन्म कुण्डली)

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

कारकांश (नवांश)

बु(व) शु	सू		रा
चं			
			ल
के गु	श मं		

भाव लग्न कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

होरा लग्न कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू

घटिका लग्न कुण्डली

		रा	श चं
			ल गु
			मं
	के	शु	बु(व) सू



ग्रहों पर दृष्टि

दृष्टि देने वाले ग्रह

दृष्ट ग्रह	अंश	सूर्य 162:35	चन्द्र 73:54	मंगल 145:58	बुध 158:23	गुरु 108:02	शुक्र 199:33	शनि 65:04	राहु 47:02	केतु 227:02
सूर्य	162:35	-	3/4 (43)	-	-	1/4 (12)	-	3/4 (41)	4/4 (57)	- (2)
चन्द्र	73:54	1/4 (14)	-	- (6)	1/4 (12)	-	1/2 (32)	-	-	3/4 (46)
मंगल	145:58	-	1/4 (27)	-	-	- (3)	-	4/4 (49)	3/4 (49)	1/4 (10)
बुध	158:23	-	3/4 (39)	-	-	1/4 (10)	-	3/4 (43)	4/4 (55)	- (4)
गुरु	108:02	-	- (2)	-	-	-	1/4 (15)	- (25)	1/4 (15)	4/4 (59)
शुक्र	199:33	- (3)	1/2 (24)	1/4 (11)	- (5)	3/4 (45)	-	1/2 (15)	- (5)	-
शनि	65:04	1/4 (18)	-	- (10)	1/4 (16)	-	1/2 (37)	-	-	3/4 (50)
राहु	47:02	1/2 (27)	-	1/4 (19)	1/2 (25)	-	3/4 (46)	-	-	4/4 (60)
केतु	227:02	1/4 (19)	- (6)	4/4 (46)	1/4 (23)	4/4 (59)	-	- (23)	4/4 (60)	-

श्रीपति भावों पर दृष्टि

दृष्टि देने वाले ग्रह

दृष्ट भाव	अंश	सूर्य 162:35	चन्द्र 73:54	मंगल 145:58	बुध 158:23	गुरु 108:02	शुक्र 199:33	शनि 65:04	राहु 47:02	केतु 227:02
प्रथम	94:59	3	-	-	1	-	22	-	8	53
द्वितीय	123:00	-	9	-	-	-	8	55	30	44
तृतीय	151:01	-	32	-	-	6	-	47	51	8
चतुर्थ	179:02	-	37	1	-	26	-	33	48	-
पंचम	211:01	9	12	22	11	51	-	4	27	-
षष्ठ	243:00	35	38	52	39	45	6	55	52	-
सप्तम	274:59	33	49	20	31	33	30	45	53	8
अष्टम	303:00	9	35	14	5	52	38	31	44	30
नवम	331:01	36	21	60	45	51	18	55	8	51
दशम	359:02	51	7	56	49	48	18	12	-	48
एकादश	31:01	35	-	27	33	8	54	-	-	27
द्वादश	63:00	19	-	11	17	-	38	-	-	52



ग्रहों की अवस्थाएं

ग्रह	जाग्रदाद्य अवस्था (3 का समूह)	बालाद्य अवस्था (5 का समूह)	लज्जिताद्य अवस्था (6 का समूह)	दीप्ताद्य अवस्था (9 का समूह)	शयनाद्य अवस्था (12 का समूह)
सूर्य	स्वपन (मध्यमफल)	युवा (पूर्णफल)	क्षुधित	दुखी (शत्रुक्षेत्र)	उपवेश (दरिद्र)
चन्द्र	स्वपन (मध्यमफल)	युवा (पूर्णफल)	क्षुधित	मुदित (अधिमित्र)	नृत्यलिप्सा (गान निपुण)
मंगल	स्वपन (मध्यमफल)	मृत (शून्यफल)		मुदित (अधिमित्र)	नृत्यलिप्सा (राज्य से धन प्राप्त)
बुध	जागृत (पूर्णफल)	वृद्ध (अत्यल्पफल)	गर्वित क्षोभित	दीप्त (उच्च)	नृत्यलिप्सा (सम्मान व वाहन)
गुरु	जागृत (पूर्णफल)	कुमार (आधाफल)	गर्वित तृषित	दीप्त (उच्च)	प्रकाशन (आनन्द अनेक सुख)
शुक्र	जागृत (पूर्णफल)	वृद्ध (अत्यल्पफल)		स्वस्थ (स्वक्षेत्र)	नृत्यलिप्सा (कला निपुण सहृदय)
शनि	स्वपन (मध्यमफल)	बाल (चतुर्थांशफल)		मुदित (अधिमित्र)	आगम (रोगयुक्त)
राहु	जागृत (पूर्णफल)	युवा (पूर्णफल)	गर्वित	दीप्त (उच्च)	नृत्यलिप्सा (महारोग नेत्ररोग)
केतु	जागृत (पूर्णफल)	युवा (पूर्णफल)	लज्जित गर्वित मुदित	दीप्त (उच्च)	नृत्यलिप्सा (दुराधर्ष अनर्थकारी)

टिप्पणी - जाग्रदाद्य व बालाद्य अवस्थाओं में कोष्ठक में ग्रहों के फल की मात्रा व शयनाद्य अवस्था में ग्रहों की अवस्थाओं का फल दिया गया है।



ग्रहों का शारीरिक संरचना पर प्रभाव

सूक्ष्म पद्धति

ग्रह	शरीर का अंग
सूर्य	दायाँ भुजा
चन्द्र	बायाँ कन्धा
मंगल	लिंग
बुध	दायाँ कान
गुरु	कण्ठ
शुक्र	दायाँ पार्श्व
शनि	बायीं आँख
राहु	बायीं भुजा
केतु	हृदय का दायाँ भाग

स्थूल पद्धति

ग्रह	शरीर का अंग	शरीर का अंग
सूर्य	कमर	बाहु
चन्द्र	बाहु	पैर
मंगल	पेट तथा कुक्षि	मुख
बुध	कमर	बाहु
गुरु	हृदय	मस्तक
शुक्र	वस्ति (पैंडू)	हृदय
शनि	बाहु	पैर
राहु	मुख	पिंडलियाँ
केतु	लिंग	पेट तथा कुक्षि

नक्षत्र पद्धति

ग्रह	नक्षत्र	प्रथम मत	द्वितीय मत
सूर्य	हस्त	दोनों हथेलियाँ	अंगुलियाँ
चन्द्र	आर्द्रा	बाल	आँखें
मंगल	पूर्वाफाल्गुनी	लिंग	दायाँ हाथ
बुध	उत्तराफाल्गुनी	लिंग	बायाँ हाथ
गुरु	आश्लेषा	नाखून	कान
शुक्र	स्वाति	दाँत	छाती
शनि	मृगशिरा	दोनों आँख	भवें
राहु	रोहिणी	दोनों टाँग	माथा
केतु	ज्येष्ठा	जीभ	शरीर का दायाँ हिस्सा



विंशोत्तरी महा व अन्तर दशाएं

भोग्य दशा : राहु 8वर्ष-2मास-22दिन
जन्मकालीन दशा : रा-ल-ल-ल-ल

राहु (18व) 0 वर्ष से 8व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
राहु		-
गुरु		-
शनि		-
बुध	30-09-2002	22-06-2003
केतु	22-06-2003	10-07-2004
शुक्र	10-07-2004	10-07-2007
सूर्य	10-07-2007	03-06-2008
चन्द्र	03-06-2008	03-12-2009
मंगल	03-12-2009	22-12-2010

गुरु (16व) 8व2म से 24व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
गुरु	22-12-2010	08-02-2013
शनि	08-02-2013	22-08-2015
बुध	22-08-2015	27-11-2017
केतु	27-11-2017	03-11-2018
शुक्र	03-11-2018	04-07-2021
सूर्य	04-07-2021	22-04-2022
चन्द्र	22-04-2022	22-08-2023
मंगल	22-08-2023	28-07-2024
राहु	28-07-2024	21-12-2026

शनि (19व) 24व2म से 43व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
शनि	21-12-2026	24-12-2029
बुध	24-12-2029	02-09-2032
केतु	02-09-2032	12-10-2033
शुक्र	12-10-2033	12-12-2036
सूर्य	12-12-2036	24-11-2037
चन्द्र	24-11-2037	25-06-2039
मंगल	25-06-2039	03-08-2040
राहु	03-08-2040	10-06-2043
गुरु	10-06-2043	21-12-2045

बुध (17व) 43व2म से 60व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
बुध	21-12-2045	19-05-2048
केतु	19-05-2048	16-05-2049
शुक्र	16-05-2049	16-03-2052
सूर्य	16-03-2052	20-01-2053
चन्द्र	20-01-2053	22-06-2054
मंगल	22-06-2054	19-06-2055
राहु	19-06-2055	05-01-2058
गुरु	05-01-2058	12-04-2060
शनि	12-04-2060	21-12-2062

केतु (7व) 60व2म से 67व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
केतु	21-12-2062	19-05-2063
शुक्र	19-05-2063	18-07-2064
सूर्य	18-07-2064	23-11-2064
चन्द्र	23-11-2064	24-06-2065
मंगल	24-06-2065	20-11-2065
राहु	20-11-2065	09-12-2066
गुरु	09-12-2066	15-11-2067
शनि	15-11-2067	24-12-2068
बुध	24-12-2068	21-12-2069

शुक्र (20व) 67व2म से 87व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
शुक्र	21-12-2069	21-04-2073
सूर्य	21-04-2073	22-04-2074
चन्द्र	22-04-2074	21-12-2075
मंगल	21-12-2075	19-02-2077
राहु	19-02-2077	20-02-2080
गुरु	20-02-2080	21-10-2082
शनि	21-10-2082	21-12-2085
बुध	21-12-2085	21-10-2088
केतु	21-10-2088	21-12-2089

सूर्य (6व) 87व2म से 93व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
सूर्य	21-12-2089	09-04-2090
चन्द्र	09-04-2090	09-10-2090
मंगल	09-10-2090	14-02-2091
राहु	14-02-2091	08-01-2092
गुरु	08-01-2092	27-10-2092
शनि	27-10-2092	09-10-2093
बुध	09-10-2093	15-08-2094
केतु	15-08-2094	21-12-2094
शुक्र	21-12-2094	21-12-2095

चन्द्र (10व) 93व2म से 103व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
चन्द्र	21-12-2095	20-10-2096
मंगल	20-10-2096	22-05-2097
राहु	22-05-2097	20-11-2098
गुरु	20-11-2098	22-03-2100
शनि	22-03-2100	22-10-2101
बुध	22-10-2101	23-03-2103
केतु	23-03-2103	22-10-2103
शुक्र	22-10-2103	22-06-2105
सूर्य	22-06-2105	22-12-2105

मंगल (7व) 103व2म से 110व2म

अन्तर	आरम्भ	अन्त
मंगल	22-12-2105	20-05-2106
राहु	20-05-2106	07-06-2107
गुरु	07-06-2107	13-05-2108
शनि	13-05-2108	22-06-2109
बुध	22-06-2109	19-06-2110
केतु	19-06-2110	15-11-2110
शुक्र	15-11-2110	15-01-2112
सूर्य	15-01-2112	22-05-2112
चन्द्र	22-05-2112	21-12-2112



शनि की साढ़ेसाती का विचार

ज्योतिष तत्व प्रकाश के अनुसार -

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।

सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुःखैर्युतो भवेत्॥

जन्म राशि (चन्द्र राशि) से गोचर में जब शनि द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थानों में भ्रमण करता है, तो साढ़े-सात वर्ष के समय को शनि की साढ़ेसाती कहते हैं।

आपकी जन्म राशि मिथुन है, अतः शनि जब वृष, मिथुन व कर्क राशि में भ्रमण करेगा तो शनि की साढ़ेसाती कहलायेगी।

एक साढ़ेसाती तीन ढैया से मिलकर बनती है। क्योंकि शनि एक राशि में लगभग ढाई वर्षों तक चलता है।

प्रायः जीवन में तीन बार साढ़ेसाती आती है।

निम्नलिखित सारणी में प्रत्येक साढ़ेसाती के प्रारम्भ और समाप्ति का समय दर्शाया जा रहा है।

साढ़ेसाती चक्र	शनि का गोचर	प्रारम्भ तिथि	समाप्ति तिथि	अंतराल वर्ष-मास-दिन	अष्टकवर्ग शनि सर्व	
प्रथम चक्र की साढ़े साती						
प्रथम ढैया (जन्म राशि से द्वादश)	वृष			--	4	33
	वृष (व)	08-01-2003	07-04-2003	0-2-29		
द्वितीय ढैया (जन्म राशि पर)	मिथुन		08-01-2003	0-3-9	4	31
	मिथुन (व)	07-04-2003	05-09-2004	1-4-28		
तृतीय ढैया (जन्म राशि से द्वितीय)	कर्क	05-09-2004	13-01-2005	0-4-8	4	31
	कर्क (व)	26-05-2005	01-11-2006	1-5-5		
द्वितीय चक्र की साढ़ेसाती						
प्रथम ढैया (जन्म राशि से द्वादश)	वृष	08-08-2029	05-10-2029	0-1-27	4	33
	वृष (व)	17-04-2030	30-05-2032	2-1-13		
द्वितीय ढैया (जन्म राशि पर)	मिथुन	30-05-2032	12-07-2034	2-1-12	4	31
	मिथुन (व)			--		
तृतीय ढैया (जन्म राशि से द्वितीय)	कर्क	12-07-2034	27-08-2036	2-1-15	4	31
	कर्क (व)			--		
तृतीय चक्र की साढ़ेसाती						
प्रथम ढैया (जन्म राशि से द्वादश)	वृष	27-05-2059	10-07-2061	2-1-13	4	33
	वृष (व)	13-02-2062	06-03-2062	0-0-23		
द्वितीय ढैया (जन्म राशि पर)	मिथुन	10-07-2061	13-02-2062	0-7-3	4	31
	मिथुन (व)	06-03-2062	24-08-2063	1-5-18		
तृतीय ढैया (जन्म राशि से द्वितीय)	कर्क	24-08-2063	05-02-2064	0-5-11	4	31
	कर्क (व)	09-05-2064	12-10-2065	1-5-3		



जन्मकालिक पंचांगादि विवरण

वेद सर्वग्रन्थों में आद्य ग्रन्थ हैं। जगत के सब शास्त्रों की उत्पत्ति का आधार वेद ही हैं। वेद शब्द की उत्पत्ति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ है, ज्ञान। ज्योतिष शास्त्र द्वारा जीवात्मा के ज्ञान के साथ-साथ परमात्मा का ज्ञान भी सहज प्राप्त हो सकता है। इसीलिये ज्योतिष को वेद के चक्षु कहते हैं। त्रिकालज्ञ महर्षियों ने हजारों वर्ष पूर्व अपने तपोबल व योगबल द्वारा ग्रहों के गुण, धर्म, रंग, रूप, स्वभाव आदि का चराचर जगत पर पड़ने वाले शुभाशुभ परिणामों का वर्णन ज्योतिष फलित शास्त्रों में विस्तार पूर्वक किया है। प्रत्येक व्यक्ति के जन्म के स्थान, दिन व समय के अनुसार उस क्षण ब्रह्माण्ड में ग्रह-राशि-नक्षत्रों की स्थिति के चित्रण को 'जन्म कुण्डली' कहा जाता है। जन्म के समय पूर्व क्षितिज में जो राशि उदित होती है उसे 'लग्न' कहते हैं। चन्द्र जिस राशि में होता है उसे 'जन्म राशि' और जिस नक्षत्र में होता है उसे 'जन्म नक्षत्र' कहा जाता है। आपके जन्म के समय पंचांग के विभिन्न अंगों का विवरण नीचे दिया गया है।

अवकहडा चक्र

लग्न	:	कर्क
चन्द्र राशि	:	मिथुन
चन्द्र राशि स्वामी	:	बुध
जन्मकालीन नक्षत्र	:	आर्द्रा
नक्षत्र चरण	:	3
नामाक्षर	:	ङ
राशि पाया	:	लौह
नक्षत्र पाया	:	चाँदी
वर्ण	:	शूद्र
वश्य	:	मानव
नाड़ी	:	आदि
योनि	:	श्वान
गण	:	मनुष्य

जन्मकालीन पंचांगादि

विक्रम संवत्	:	2059
मास	:	आश्विन
जन्मकालीन तिथि	:	कृष्ण अष्टमी
जन्मकालीन योग	:	वरियान्
जन्मकालीन करण	:	कौलव
आधुनिक जन्म वार	:	सोमवार
ज्योतिषिय जन्म वार	:	रविवार

घात चक्र

घात मास	:	आषाढ़
घात तिथि	:	2/7/12
घात वार	:	सोमवार
घात नक्षत्र	:	स्वाति
घात योग	:	परिघ
घात करण	:	कौलव
घात प्रहर	:	3
घात चन्द्र	:	कुम्भ



कुण्डली फल

ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान से मनुष्य को श्रेष्ठ लाभ यह है कि उसे पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मों का ज्ञान, वर्तमान जन्म में शुभकर्म करने की आवश्यकता, मानवीय जन्म का उद्देश्य, ईश्वरीय व मानवीय शक्ति में अन्तर, कर्म और भोग की मर्यादा, प्रारब्ध और प्रयत्न की सीमा व दोनों का परस्पर सम्बन्ध, अनुकूल व प्रतिकूल समय का ज्ञान व संकट समय मन में धैर्य रख उस पर विजय प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है। इस शक्ति से मन में सन्तोष, सन्तोष से चिन्ता का नाश, चिन्ता-नाश से धर्म की प्राप्ति, धर्म से धैर्य व शक्ति की प्राप्ति और शक्ति से ईश्वर के प्रति भक्ति व विश्वास क्रमशः प्राप्त करते हुए व संसारिक आपत्तियों को सहर्ष स्वीकार करने की क्षमता प्राप्त होती है।

प्रकृति एवं स्वभाव

- 1 - आप अत्यंत संवेदनशील होंगे - दूसरों की कही जरा सी बात पर घंटो सोचते रहने की प्रवृत्ति होगी।
- 2 - आप अत्यधिक भावुक होगा - भावनाओं में बहकर कई बार अव्यवहारिक निर्णय लेगा।
- 3 - आप अत्यधिक कल्पनाशील तथा परिवर्तनशील विचारों के होंगे।
- 4 - आप नारियल की तरह उपर से कठोर किंतु भीतर से बेहद कोमल होंगे।
- 5 - आप कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान और पूज्यजनों - गुरुजनों के प्रति श्रद्धावान होंगे।
- 6 - आप को पानी से, जलाशयों और झरनों, बाग-बगीचों से बड़ा मोह होगा।
- 7 - आपकी गान विद्या में स्वाभाविक रुचि होगी और संगीत सुनने में अति आनंदित होंगे।
- 8 - आपकी चित्त वृत्ति अस्थिर किंतु किंचित मात्रा में अंतर्दृष्टि से संपन्न होगी।
- 9 - आप को अपने परिवार से, विशेष रूप से माँ से अगाध लगाव होगा। प्रेम-पात्रों के प्रति निष्ठावान होंगे।
- 10 - आप को अपमान से बड़ा डर लगेगा, उपर से एक मज़बूत किलेबंदी करेंगे जिससे कि आपके मर्म को चोट न लगे।
- 11 - आप कभी महा कठोर, महा सक्षम होने का आभास देंगे तो कई परिस्थितियों में बच्चों की तरह घबराये हुए, असहाय दिखेंगे।
- 12 - आप को मिष्ठान्न विशेष प्रिय होंगे।
- 13 - आप को यात्रायें प्रिय होंगी, जन्मभूमि एवं देश से लगाव होने के बावजूद भी प्रवासी एवं भ्रमणशील होंगे।
- 14 - आप देखने में खुले हुए और स्पष्टवादी होंगे किंतु वास्तव में आप ऐसे नहीं होंगे, आप दूसरों से बहुत सी बातें छिपा लेंगे।
- 15 - आप स्त्रीवर्ग के प्रति अत्यधिक आर्कषित होंगे किंतु बाहर से प्रदर्शित नहीं करेंगे।
- 16 - आप के व्यक्तित्व में कम या अधिक मात्रा में जो दुर्गुण सम्भव हैं वे हैं - अधैर्य, परिवर्तनशीलता, अतिसंवेदनशीलता, निष्क्रियता व क्रोधी मिजाज।



शास्त्रों के अनुसार फल

आप के काले, लालिमायुक्त चंचल नेत्र, सुन्दर शरीर, बहुधा गौर वर्ण मतान्तर से साँवला वर्ण, उँची नाक, घुंघराले केश, चेहरे पर कोई दाग सम्भव है, देखने में चुस्त किन्तु दैनिक कार्यों में आलसी है। आप शास्त्रज्ञ, तीक्ष्ण बुद्धि, मेधावी, काव्य सृजन की क्षमता, हास्य प्रिय, अध्ययनशील, पुस्तक प्रेमी, तर्क करने में कुशल, संदेश वहन करने या मध्यस्थता कार्य करने में निपुण, भाषण में कुशल, जरा सी बात पर क्रोधित होने की आदत, शतरंज आदि खेल में रुचि, संगीत-नृत्य प्रिय, पक्की मित्रता करने की इच्छा, गुरुजनो के प्रिय, दान में तत्पर, सत्य धर्म में तत्पर, श्रेष्ठ भाग्यशाली, स्वभाव से प्रसन्न, बाल्य अवस्था में अति सुखी, दो माताओं से पालित, थोड़ी संतान युक्त, यशस्वी, धनवान, गुणवान, निश्चित संकल्प युक्त, समर्थ, नीतिवादी, श्रेष्ठ शीलवान, मिष्टान्न प्रेमी, कौतुक प्रेमी, सर्वप्रिय, सर्वप्रेमी हैं। विषय सुख में आसक्त, एक से अधिक व्यवसाय या व्यवसाय में कई बार परिवर्तन होगा। स्त्री की विशेष इच्छा रखने वाले, काम शास्त्र के ज्ञाता, स्त्री से पराजित अर्थात् स्त्री के वश में होते हैं। पेट के रोग (आँव, मरोड़, कब्ज) इत्यादि होता है।

आधुनिक मत से फल

आप अति कुशाग्र बुद्धि के, विद्या के प्रति स्वभाव से आकृष्ट, विविध विषयों, ज्ञान-विज्ञान, विद्याध्ययन में बहुत रुचि रखने वाले तथा मस्तिष्क प्रधान हैं। आप आकाश-विहारी हैं, अपने विचारों के पंखों पर सवार हो कर क्षणमात्र में कहीं से कहीं की यात्रा कर लेते हैं। स्वभाव में दोहरापन - कभी आप धीर-गंभीर हाते हैं, तो कभी चंचल और वाचाल। आप की वाणी प्रभावशाली, उच्चारण स्पष्ट और अर्थ बोध युक्त, अत्यंत वाक्पटु एवं वार्तालाप में कुशल हैं। अपनी बातचीत की विशिष्ट शैली के कारण शीघ्र ही लोगों को प्रभावित कर लेते हैं। आप अत्यंत चतुर हैं तथा दूसरों से अपना काम निकाल लेने की आपमें विशेष कला है। दूत कार्य करने में निपुण, साक्षी कार्यों में सम्मिलित होने वाले और सामाजिक आस्थाओं में रुचि रखने वाले हैं। जिज्ञासु तथा तथ्यान्वेषी प्रवृत्ति के कारण प्रत्येक कार्य की गहराई में जाना चाहते हैं जैसे कि आप कोई अनुसंधान कर रहे हों। गीत-संगीत के शौकीन तथा नृत्य व काव्य में विशेष रुचि रखते हैं। स्वयं ही अपने आलोचक होंगे, दूसरे शब्दों में अपने मूर्तिभंजक स्वयं होंगे। आप में प्रमुख कमियाँ हैं -वाचालता, विविधता, एक कार्य को पूर्ण करने से पूर्व दूसरा प्रारंभ करना, एकाग्रता का अभाव, शीघ्र निर्णय की कमी, किसी चीज का शीघ्र परिणाम जानने की चिंता एवं उतावलापन इत्यादि।

शारीरिक लक्षण

- 1 - आपकी उँचाई उत्तम मध्यम होती है।
- 2 - चेहरा गोलाकार, गाल भरे हुये तथा देखने में बाल्टी जैसा लगता है। चेहरा न लम्बोतरा होता है न चौड़ा, बल्कि अंडाकार व व्यवस्थित होता है।
- 3 - हाथ-पैर और शरीर का अधोभाग अपेक्षाकृत स्थूल तथा परिपुष्ट होता है।
- 4 - उम्र के साथ-साथ बड़ा पेट तथा मोटापे की प्रवृत्ति होती है।
- 5 - चाल कुछ तेज होती है। आप मधुर कंठ-स्वर संपन्न होते हैं।



महत्त्वपूर्ण जानकारी

आपका मूल वाक्य है

मैं महसूस करता हूँ।

सबसे बड़ा गुण है

विश्वसनीयता।

सबसे बड़ी कमी है

लापरवाही।

महत्वाकांक्षा है

सामाजिक सम्मान तथा आर्थिक सुरक्षा।

शुभ दिन

सोमवार, मंगलवार तथा शुक्रवार।

शुभ रंग

सफेद, लाल तथा पीला शुभ हैं। नीला तथा हरा रंग ठीक नहीं हैं।

शुभ अंक

2, 7, 9 सर्वाधिक शुभ हैं। 1, 3, 4, 6 मध्यम शुभ हैं। 5, 8 अशुभ हैं।

शुभ रत्न

मोती, लाल मूँगा, पीला पुखराज।

शुभ उपरत्न

चन्द्रमणि।

अशुभ मास तारीखें

प्रतिवर्ष दिसम्बर मास, प्रतिमास 11, 16, 26, 28, तारीखें और शनिवार का दिन हमेशा कष्टप्रद रहेगा, इन दिनों सावधानी से काम करें।

अशुभ तिथि

प्रतिपदा, सप्तमी और द्वादशी तिथि जातक के लिए अनिष्टकर होते हैं।

शुभ राशि

मेष, वृष, मिथुन, कन्या एवं तुला राशि वालों से जातक का उपकार होता है। कर्क राशि वाले से शत्रुता होती है।

शुभ दिवस

शुक्रवार

अरिष्ट समय

यवनाचार्य के मतानुसार वैशाख मास, शुक्लपक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, हस्तनक्षत्र एवं मध्याह्न समय अरिष्टकारी होता है।



ग्रह फल

सूर्य

सूर्य तृतीय भाव में

शुभ फल : तृतीय भाव में सूर्य होने से जातक विख्यात, नीरोग, सुशील, बुद्धिमान, क्रोधहीन, मधुरभाषी, दयालु और भूपति होता है। स्थिर और निश्चयी, विज्ञान और कला का प्रेमी, निवास स्थान क्वचित् ही बदलने वाला होता है। तीसरे स्थान में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक प्रतापी तथा प्रबल पराक्रमी होता है। प्रताप से शत्रु हतप्रभ बने रहते हैं। विवाद में सदा विजय मिलती है। युद्ध में सर्वदा शत्रुओं का नाश होता है। शरीरिक शक्तिसम्पन्न, बलवान्, शूर और श्रीयुक्त होता है। मीठा बोलने वाला, सर्वजनप्रिय, आकर्षक और प्राज्ञ होता है। राज्यमान्य, राजा से सुख प्राप्त करने वाला कवि, लब्ध प्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है। धनवान्, धैर्यवान् तथा दूसरों का उत्कर्ष देखकर प्रसन्न होनेवाला होता है। परदेश भ्रमण तथा तीर्थयात्रा करता है। चित्त शुभ कामों की ओर आकृष्ट होता है। अपने प्रिय जनों का हित चाहनेवाला होता है। स्त्रीसुख तथा पुत्रसुख मिलता है। सुन्दर स्त्रियों का तथा अपने धन का उपभोग करनेवाला होता है। दुर्जनों से सेवा ग्रहण करनेवाला, धनाढ्य, धनसम्पन्न तथा त्यागी, दानशूर होता है। वाहनसुख प्राप्त होता है तथा नौकरों से युक्त होता है। छोटे-भाई थोड़े होते हैं। दो भाई होते हैं। किसी शुभग्रह की युति हो तो भाइयों की बढ़ोत्तरी होती है।

स्त्रीराशि का रवि हो तो भाई-बहिन होते हैं। संपत्ति की दृष्टि से फल अच्छे मिलते हैं। मनुष्य धन-वाहन सम्पन्न होता है। यह रवि संतति के लिए भी अच्छा है।

अशुभ फल : तृतीयभाव में सूर्य होने से छोटे भाई संख्या में थोड़े होते हैं या बन्धुहीन होता है। बड़े भाई की मृत्यु होती है। तृतीयभाव में स्थित सूर्य भाई-बन्धुओं से हानि कराता है। सगे भाइयों से दुःख प्राप्त होता है। तृतीय में रवि होने से जातक को भाई के साथ नहीं रहना चाहिए अन्यथा एक दूसरे के भाग्योदय में कई एक विघ्न उपस्थित होंगे। अपने भाई बांधवों का नाश होता है। अपने पक्ष के लोगों का शत्रु होता है अर्थात् अपने भाई-बन्धुओं के साथ इसका बर्ताव शत्रु जैसा होता है। हाथ में चोट वगैरह लग जाती है। चौथे, पंचम में, आठवें वा बारहवें वर्ष कुछ पीड़ा होती है।

स्त्रीराशि का रवि होने से विभाजन सम्बन्धी झगड़े कोर्ट में चलते हैं।



ॐ

चन्द्र

ॐ

चन्द्र द्वादश भाव में

शुभ फल : बारहवें भाव में चन्द्रमा होने से जातक एकान्तप्रिय, मृदुभाषी होता है। बारहवें भाव का चन्द्र जातक के धन को शुभ कार्यों में, यज्ञादि कार्यों में व्यय कराता है। मंगलकार्यों में अर्थात् विवाह आदि शुभ कर्मों में अपने धन का खर्च करता है। इस तरह जातक सद्ध्ययी होता है। राजयोगी, ज्ञानी, मांत्रिक या शास्त्रज्ञ हो सकता है। स्त्रियों का उपभोग अच्छा मिलता है।

चन्द्र वृश्चिक या मकर के अलावा अन्य राशियों में होने से जातक विजयी, सुखी तथा धनी होता है। विद्वान होता है।

मिथुन, तुला और कुम्भ में चन्द्र हो तो बर्ताव व्यवस्थित होता है। रुपए का सदुपयोग होता है। मनुष्य विद्वान तो होता है किन्तु प्रभावशाली नहीं होता है।

चन्द्रमा स्वर्गही होने, अथवा बुध या गुरु की राशि में होने से जातक दान्तिक (इन्द्रिय दमन करनेवाला) दानी, पतला (छरहरा) शरीर और सुख भोगनेवाला होता है।

चन्द्रमा के पुरुष राशियों में होने पर उपर दिये शुभ फल अधिक अनुभव में आते हैं।

अशुभ फल : प्रायः द्वादशभावगत चन्द्रमा के फल अशुभ हैं। जातक का कृश और दुर्बल शरीर होता है। शरीर क्षीण और पतला होता है। मंदाग्नि रहती है और भूख कम होती है। अच्छा भोजन नहीं मिलता है। वह सच्चरित्रवान् नहीं होता है। शुभाचरणहीन होता है। सदा क्रोधावेश में रहता है। जातक दुःखी, आलसी तथा अपमानित होता है। पतित, क्षुद्र, तथा व्याकुल रहता है। लोग इससे द्वेष करते हैं। लोग इस पर विश्वास नहीं करते और इसे सदैव संदेह-दृष्टि से देखते हैं। कुपात्र के लिए धन का व्यय करता है। इस तरह असद्ध्ययी होता है। अधिक व्यय करनेवाला होता है। धन का अपव्यय करता है। निर्धन होता है। चन्द्रमा द्वादशभाव में होने से जातक कृपण (कंजूस) होता है। धन का नाश होता है। जातक ऐसी अव्यावहारिक कल्पना करता है जिसका पूर्ण होना कठिन होता है। प्रायः जातक के मनोरथ पूर्ण नहीं होते। स्त्रियों के साथ जातक के सम्बन्ध चिरस्थायी नहीं रहते। स्त्रियों से विशेष प्रेम नहीं होता है। रति (स्त्रीसहवास और स्त्रीसंग) से खेद प्राप्त होता है। चन्द्रमा द्वादशस्थान में होने से पति पत्नी में अकारण ही कई बार वियोग होता है। बारहवें भाव में चन्द्रमा होने से जातक नेत्ररोगी, और नेत्रादि के विकार से पीड़ा रहती है। द्वादश चन्द्र होने से जातक एक आँख से काणा होता है। जातक कफरोगी होता है। पितृकुल, मातृकुल से व्याकुलता प्राप्त होती है। जातक का मन चाचा आदि मामा आदि से मलिन रहता है। अर्थात् पिता के भाई से और पितृव्य के पुत्र और स्त्री से प्रेम नहीं होता है अपितु परस्पर वैमनस्य रहता है। इसी तरह माता से और माता के पिता के कुल में उत्पन्न मामा आदि से भी मनमुटाव रहता है। द्वादशस्थान में चन्द्रमा होने से जातक पाप करने में अपनी अक्ल लड़ाता है। अपने कुल में नीचवृत्ति होता है। सदैव नीच वृत्तिवाले मनुष्यों की संगति में रहनेवाला होता है। व्यसनी, शराब पीनेवाला अतएव रोगी होता है। जीवहिंसक और क्रूर होता है। चन्द्रमा द्वादश होने से जातक विदेश में निवास करता है। अपने मित्रों से जातक का व्यवहार और बर्ताव अच्छा नहीं होता है। मित्रहीन होता है। मित्र बहुत नहीं होते हैं। मित्र अच्छे नहीं होते हैं। शत्रुओं से भय भय रहता है। शत्रुओं की वृद्धि होती है। अपने शत्रुओं से पराजित होता है। जातक विशेषतः क्रोधावेश में रहता है अर्थात् बहुत क्रोधी होता है। लड़ाई-झगडा होता रहता है। क्रोध-कलह की बढ़ोत्तरी होती है। निन्दित कर्म करता है अतः लोग निन्दा करते हैं। यवनमत से 49 वें वर्ष में पानी से अपघात होता है।

चन्द्रमा का सम्बन्ध पापग्रह के साथ अथवा शत्रुग्रह के साथ होने से जातक मृत्यु के अनन्तर नरकगामी होता है।

चन्द्र हीनबली होने से जातक का वीर्य कमजोर होता है।



मंगल



मंगल द्वितीय भाव में

शुभ फल : सहिष्णु, खेती करनेवाला, पतली देह तथा सदा सुखी रहता है। नित्यप्रवास, परदेशवासी होता है। विक्रयकुशल, उद्यमी, जातक धातुओं का व्यापारी होता है। सत्यवक्ता, तथा पुत्रवान् होता है। बिलडिंग के काम, मशीनों की सामग्री, पशुओं का व्यापार, खेती, लकड़ी तथा कोयलेका व्यापार, वैद्यक, नाविक, इन व्यवसायों में धनप्राप्ति होती है।

मेष, सिंह और धनु राशि में होने से मशीनरी-लकड़ी-कोयला व्यवसाय से लाभ होता है।

द्वितीय मंगल मेष, सिंह, धनु में होने से एकदम धन प्राप्ति की इच्छा होती है। अतएव लाटरी, सट्टा-जूआ आदि की ओर रुचि होती है।

परस्त्रियों से धनलाभ होता है, परन्तु यह धन इसी व्यसन में नष्ट हो जाता है।

मंगल पर शुभग्रह की दृष्टि होने से या ग्रह बलवान होने से अच्छा धन लाभ होता है।

सत्यवक्ता, तथा पुत्रवान् होता है। 'पुत्रवान् होना' यह फल पुरुष राशि का है।

अशुभफल : द्वितीय भाव में स्थित मंगल अनिष्टकर और अरिष्टकर होता है। द्वितीय स्थान मंगल होने से जातक कटुभाषी होता है। निर्धनता, पराजय, बुद्धि हीनता के कारण पारिवारिक पक्ष से क्लेश प्राप्त करता है। कुटुम्ब का सुख नहीं होता है। धन का सुख नहीं होता है। धन का दुरुपयोग कर नष्ट कर देता है। धनभावगत भौम हो तो जातक कुत्सित अन्नभोक्ता होता है। निकृष्टान्न भोजी होता है। द्वितीयभाव में मंगल होने से या तो चेहरा अच्छा न हो या बोलने में प्रवीण न हो। आंख और कान की बीमारियों की संभावना रहती है। रक्त विकार, शिर में पीड़ा मस्तक में किसी चीज से लगा निशान होता है। आंख वा मुख पर शस्त्रघातादि की सम्भावना रहती है। अपनी स्त्री के लिये घातक होता है तथा दूसरों की स्त्रियों में आसक्त रहा करता है। धनभाव में भौम होने से जातक निर्धन होता है। यवन के अनुसार जातक नित्य ही ऋणग्रस्त होता है। द्वितीय मंगल होने से जातक दुष्टों का वैरी, निर्दयी, क्रोधी होता है। असज्जनाश्रित, कुत्सित आदमियों की नौकरी में रहे। क्रिया कर्म में रुचि न रखनेवाला होता है। विलंब से काम करने वाला होता है। जातक नीच लोगों के साथ रहनेवाला और मूर्ख होता है। दूसरों से धन लेनेवाला, जुआरी होता है। विद्वत्ता नहीं होती है। द्वितीय भाव में मंगल ज्योतिष्यों के लिए नेष्ट है। इनके कहे हुए बुरे फल जल्दी मिलेंगे, शुभ फलों का अनुभव शीघ्र नहीं होगा।

धनस्थान में क्रूरग्रह (मंगल) होने से तथा सौम्यग्रह की उस पर दृष्टि या युति न होने से मुख, आँख, दाहिना कन्धा, अथवा कान इन भागों पर जख्म होता है।

मंगल अगर पुरुष राशि में हो तो जातक कटु-तिक्तरसप्रिय, निकृष्टभोजनसंतुष्टि होता है।

मंगल स्वराशि(1,8) में या अग्निराशि(1,5,9) में होने से पत्नी की मृत्यु होती है। ऐसा युवावस्था में होता है। बच्चों के लिए, घर-गृहस्थी चलाने के लिए दूसरा ब्याह करना पड़ता है।



बुध



बुध तृतीय भाव में

शुभ फल : जातक अच्छे शरीर का, घार्मिक-यशस्वी, तथा देव और गुरुओं का आदर करनेवाला होता है। तीसरे भाव में बुध होने से जातक सरस एवं सरल हृदय का होता है। जातक बुद्धिमान्, नम्रस्वभाव का होता है। तृतीय में बुध होने से जातक साहसी, शूरवीर हो किन्तु मध्यायु हो। तृतीय स्थान का स्वामी बलवान होने से दीर्घायु और धैर्यवान् होता है। जातक चतुर तथा हितकारी होता है। जातक की परोपकारी वृत्ति होती है। जातक अपनी बुद्धि से अपनी व्यवहार कुशलता से, उदण्ड स्वभाव के लोगों को भी अपनी मुठ्ठी में कर लेता है, और इनसे भी आवश्यक लाभ उठा लेता है। तीसरे बुध होने से जातक के भाई बहन अच्छे होते हैं। स्वयं बन्धुओं को प्रिय होता है। बड़े परिवार से युक्त होता है। पाँच भाई और चार पाँच बहिनें तक हो सकती हैं। भाई और बहिनों को बहुत सुख प्राप्त होता है। जातक के दो लड़के और तीन लड़कियाँ होती हैं। जातक स्वजनों से युक्त, अपने जनों का हितसाधक होता है। जैसे वृक्ष के इर्द गिर्द सहारा पाने के लिए लताएँ लटकी रहती हैं-उसी तरह आश्रय पाने के लिए जातक के भाई बन्धु इसके निकट पड़े रहते हैं और जातक अपनी शक्ति के अनुरूप इनकी सहायता करता है। अपने सहोदरबन्धु वर्गों के अनुशरण से अधिक सुख होता है। भाई दीर्घायु होता है। सरस हृदय होने के कारण स्त्रियों के प्रति स्वाभाविक अनुराग होता है। पड़ोसियों और परिचितों से प्रेम पूर्वक बरताव करते हैं। बहुत मित्र होते हैं। जातक के साथ की गई मित्रता आसानी से नहीं टूटती। जातक को प्रवास बहुत करना पड़ता है। प्रवास से सुख और लाभ होता है। शास्त्रकार, ज्योतिष तथा गुप्तविद्याओं में प्रवीण होता है। लेखन कार्य, छापने का काम -तथा प्रकाशन का व्यवसाय-तृतीय बुध होने से लाभकारी होते हैं। व्यापार की तरफ जातक की रुझान स्वाभाविक रूप में रहा करती है। एक प्रवीण और चतुर व्यापारी होकर व्यापार से जीवन व्यतीत करता है। व्यापारी लोगों से मित्रता करके-व्यापार से घन कमाता है। घनवान् तथा समृद्ध होता है। जातक लेखन, वाचन और भाषण में कुशल होता है। अन्तिम अवस्था में प्राक्तन जन्मकृत शुभकर्म जन्य संस्कारों के उद्बुद्ध हो जाने के कारण तीव्र वैराग्य से संसार से नितांत विरक्त होकर सन्यस्त हो जाता है और अर्थात् मोक्षमार्ग पर अग्रसार हो जाता है। वृद्धावस्था में वैराग्य से विषय वासनाएँ लुप्त हो जाती हैं।

तृतीयस्थ बुध बलवान् होने से भाग्योदय 24 वें वर्ष से होता है।

अशुभ फल : तृतीयभाव में बुध होने से जातक बहुत दुष्ट होता है। घन की बुद्धि से (लोलुपता से) दुष्ट बुद्धियों के बश में रहता है। जातक मन्द बुद्धि का, अशुभविचार करनेवाला होता है। जातक अपवित्र मलिन हृदय होता है। चित्त शुद्ध नहीं होता। जातक मायावी, बहुत चंचल, चपल और दीन होता है। श्रम बहुत करना पड़ता है और दैन्य युक्त होता है। भाइयों का सुख कम मिलता है। जातक अविचारित होता है, और मनमाना काम करता है इस कारण जातक को अपने लोग छोड़ जाते हैं। इष्ट-मित्रों से हीन होता है। जातक अत्यन्त विषयासक्त होता है अर्थात् विषयोपभोग लिप्त ही रहता है। जातक मोह जाल में फँसकर अपने अमूल्य रत्नरूपी मानवजीवन को नष्ट करता है। जातक सुखहीन होता है। सुख नष्ट होता है। यवनजातक ने 12 वें वर्ष घनहानि होती है-ऐसा कहा है क्योंकि बुध तृतीय में हो तो रवि प्रायः घनस्थान में, वा चतुर्थस्थान में होता है अतः पैतृकसंपत्ति नष्ट होती है और पिता दरिद्री होता है।

तृतीय में बुध स्त्री राशि में होने से शिक्षा पूरी नहीं होती है-हस्ताक्षर लेखन अच्छा शीघ्र तथा संगत नहीं होता है-स्मरणशक्ति मंद होती है।

बुध पर शत्रुग्रह की दृष्टि होने से भाइयों की मृत्यु होती है।



बृहस्पति प्रथम भाव में

शुभ फल : बृहस्पति-लग्न में रहने पर उत्तम फल मिलता है। जातक का शरीर नीरोग, दृढ़-कोमल, वर्ण गोरा और मनोहर होता है। जातक देवताओं के समान सुंदर शरीर वाला, बली, दीर्घायु होता है। जातक तेजस्वी, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, विनीत, विनय-सम्पन्न, सुशील, कृतज्ञ एवं अत्यंत उदारचित होता है। जातक निर्मलचित, द्विज-देवता के प्रति श्रद्धा रखने वाला, दान, धर्म में रूचि रखने वाला, एवं धर्मात्मा होता है। जातक विद्याभ्यासी, विचार पूर्वक काम करनेवाला, सत्कर्म करने वाला, बुद्धिमान्, विद्वान्, पंडित, ज्ञानी तथा सज्जन होता है। आध्यात्मिक रुचि, रहस्य विद्याओं का प्रेमी होता है। जातक मधुर प्रिय होता है तथा सर्वलोकहितकर, सत्य और मधुर वचन बोलता है। स्वभाव स्थिर होता है। स्वभाव से प्रौढ़ प्रतीत होता है तथा सर्वज्जन मान्य होता है। घूमने-फिरने का शौकीन होता है। जातक अपने भाव अपने मन में ही रखता है। जातक प्रतापी, प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न होता है। लग्न में बृहस्पति होने से जातक शोभावान्, और रूपवान्, निर्भय, धैर्यवान्, और श्रेष्ठ होता है। सामान्यतः लग्न में किसी भी राशि में गुरु होने से जातक उदार, स्वतंत्र, प्रामाणिक, सच बोलनेवाला, न्यायी, धार्मिक तथा कीर्तिप्राप्त करनेवाला और शुभ काम करनेवाला होता है। मस्तक बड़ा और तेजस्वी दिखता है। जातक का वेश (पोशाक) सुन्दर होता है। जातक सदा वस्त्र तथा आभूषणों से युक्त-सुवर्ण-रत्नआदि धन से पूर्ण होता है। राजमान्य-तथा राजकुल का प्रिय होता है। राजा से मान तथा धन मिलता है। अपने गुणसमूह से ही सर्वदा लोगों में गुरुता (श्रेष्ठता-बड़कप्पन) प्राप्त होती है। गुणों से समाज में मान्य होता है। स्त्री-पुत्र आदि के सुख से युक्त होता है। पुत्र दीर्घायु होता है। बचपन में सुख मिलता है। सभी प्रकार के सुख प्राप्त करता है। विविध प्रकार के भोगों में धन का खर्च करता है। जातक शत्रुओं के लिए विषवत् कष्टकर होता है। विघ्नों को गुरु तत्काल नाश करता है। जीवनयात्रा के अन्त में विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। शरीर छोड़ने पर जातक की उत्तमगति होती है अर्थात् स्वर्गगामी होता है। जलराशि में होने से रेश करनेवाला खिलाड़ी, पैसे की फिक्र न करनेवाला, धनप्राप्त करनेवाला, और उदार होता है।

डाक्टरों के लिए कर्क, वृश्चिक तथा मीन लग्न का गुरु शुभ है।

अशुभफल : अल्पवीर्य-अर्थात् अल्पबली-कमजोर होता है। शरीर में वात और श्लेष्मा के रोग होते हैं। झूठी अफवाहों से कष्ट होता है। धनाभाव बना ही रहता है। लग्नस्थ गुरु के फलस्वरूप माता-पिता दोनों में से एक की मृत्यु बचपन में सम्भव है। लग्न स्थान का गुरु द्विभार्या योग कर करता है। विवाहाभाव योग भी बन सकता है। लग्नस्थ गुरु पुलिस, सेना-आबकारी विभागों में काम करने वालों के लिए नेष्ट है। अर्थात् ये विभाग लाभकारी नहीं होंगे।

कर्क लग्न में गुरु होने से संकटों का अनुभव बार-बार होता रहता है।

षष्ठ-अष्टम या व्ययस्थान में उच्चराशि में होने से संपूर्ण शुभफल का नाश करता है।

मेष, मिथुन, कर्क, कन्या-मकर को छोड़ अन्य लग्नों में गुरु होने से जातक भव्य भाल का, विनोदी स्वभाव का, किसी विशेष हावभाव से बातें करने वाला होता है।

वृष, कर्क, कन्या तथा वृश्चिक राशियों में गुरु होने से बहुभोजी होता है।

कर्क और वृश्चिक लग्न में स्थित गुरु से जातक अच्छेस्वभाव का, किन्तु क्रोधी होता है।

मेष-कर्क-तुला-मकर लग्न में गुरु होने से नीच स्त्रीगामी होता है।

लग्नस्थ गुरु अशुभ सम्बन्ध का अच्छा फल नहीं देता है।



♀

शुक्र

♀

शुक्र चतुर्थ भाव में

शुभ फल : प्रायः सभी शास्त्रकारों ने चतुर्थभावस्थ शुक्र के फल शुभ बतलाए हैं। इनका अनुभव पुरुषराशियों में मिलता है। चतुर्थभावस्थ शुक्र होने से जातक शरीर से सुन्दर, स्वभाव से परोपकारी होता है। व्यवहारदक्ष, प्रसन्न, वाचाल और पराक्रमी होता है। मन से उदार और दूसरे का हित चाहने वाला होता है। धर्म-कार्य के प्रति आस्था रहती है। चित्त पूजा तथा उत्सव के कार्यों में बहुत लगता है। देवताओं का भक्त तथा पूजक होता है। सदैव आनन्द में रहनेवाला होता है। सदा एक समान ही रहता है। किसी की प्रसन्नता से जातक का चित्त हर्षोल्लास से प्रफुल्लित नहीं होता है। और किसी को रुष्टता या अप्रसन्नता से जातक का चित्त विकृत या खिन्न नहीं होता है। बुद्धि तथा विद्या प्राप्त होती हैं। चौथे स्थान में शुक्र होने से जातक लोगों द्वारा अधिक सम्मान पाता है। महान् पूजनीय होता है। योगिजन वृत्ति का जातक बड़े महत्व देने वाले कार्य करता है, जिस कारण लोग जातक का अधिक से अधिक आदर-मान करते हैं। लोग आदर मान करके अपने को धन्य मानते हैं। चतुर्थ स्थान में शुक्र की स्थिति से जातक राज परिवार में सम्मानित, राजपूज्य होता है। जन्म समय से ही जातक को मातृसुख विशेषतः प्राप्त होता है। और मातृभक्त तथा मातृसेवक होता है। शुक्र के चतुर्थभाव में होने से जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होते हैं। लम्बी उम्र के जीवन में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहती है। उत्तम बाहन-मोटर आदि की सवारी का सुख प्राप्त होता है। सुखभाव में भृगुपुत्र के होने से जातक को अच्छा घर, अच्छा वाहन, अच्छे आभूषण, वस्त्र तथा अच्छे सुगंधित पदार्थ प्राप्त होते हैं। जातक का घर देव घर से भी अधिक सुन्दर होता है। फूलों के हार, वस्त्र आदि से जातक का घर सुंदर लगता है। चांदी के रूप में जातक के घर बहुत धन रहता है। विपुल धान्य और दूध-दही घरमें होता है। पैतृक सम्पत्ति मिलती है। स्थावर स्टेट मिलती है। चौथे भाव में पड़ा शुक्र जातक को उन्नति के अवसर प्रदान करता है तथा उनमें सफलता भी दिलाता है। बन्धुभावगत शुक्र के होने से जातक उत्तम स्त्री तथा परिवार से युक्त होता है। जातक स्त्री के वशवर्ती होता है। स्त्री के आश्रय से सुख मिलता है। एक से अधिक स्त्रियों का उपभोग करता है। विलासी होता है। भाइयों का सुख अच्छा मिलता है। मित्रों और बांधवों से प्रेम करने वाला होता है। मित्र सुख, क्षेत्र (भूमि) सुख, ग्राम सुख से युक्त होता है। आयु का उत्तम होता है। मृत्यु अच्छी स्थिति में होती है। जातक को पैतृकसम्पत्ति की प्राप्ति होती है। किन्तु ऐश-आराम में अथवा बड़े व्यवसायों में भारी खर्च करने से सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। तदनन्तर अपने परिश्रम से धन प्राप्ति होती है। स्त्रियों से मदद अच्छी मिलती है। चतुर्थभावस्थ शुक्र के जातक नौकरी भी करते हैं साथ ही और कार्य भी करते रहते हैं। मीठा बोलकर अपना काम बना लेता है। अपना स्वार्थ सिद्ध होता हो तो दूसरों की मदद भी करता है। 32 वर्ष तक अस्थिर रहता है। कुछ समय नौकरी, कुछ समय कोई और व्यवसाय करता है-अन्त में व्यापार में स्थिर हो जाता है और कीर्तिलाभ करता है। पुरुषराशि का चतुर्थभावस्थ शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर और आकर्षक होती है। चतुर्थ स्थान के शुक्र का साधारण फल यह है कि विवाह के बाद भाग्योदय होता है। अपना घरबार होता है। आयु का अन्तिम भाग अच्छा बीतता है। किन्तु यह समय स्त्री के वश में रहने का होता है। बड़े लोगों से स्नेह होता है। उनसे सहायता मिलती है। प्रथम पुत्रसन्तति होती है। चतुर्थभाव का शुक्र हमेशा आर्थिक चिन्ता करवाता है। आयु के 24-26 और 36 वें वर्ष में शरीरिक कष्ट बहुत होता है। तीसरे वा छठे वर्ष में घर में किसी ज्येष्ठ व्यक्ति की मृत्यु होती है। माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु जल्दी होती है। जीवित रहे तो सुख 45 वें वर्ष तक मिलता है।

शुक्र पीडित न हो तो जीवन भर अच्छा सुख मिलता है।

चतुर्थश बलवान् होने से घोड़े-पालकी सोने के आसन आदि वैभव प्राप्त होता है।

शुक्र पुरुषराशियों में होने से मातृसुख पूर्ण नहीं मिलता है। यदि माता जीवित रहे तो सदैव रोगाग्रस्ता रहती है।

वृष या तुला का शुक्र होने से जातक की पत्नी बहुत ही साधारण या कुरूपा होती है।

अशुभ फल : जातक जन्म से ही निर्धन, कफ रोग तथा नेत्र रोग से पीडित होता है। जातक विक्षिप्त स्वभाव



का होता है।

शुक्र पापग्रह युक्त, अथवा पापग्रह की राशि में, शत्रुराशि में, या नीच में दुर्बल होने से खेती, वाहन आदि नहीं होते।
माता को कष्ट होता है। घर में ही अधिक रहनेवाला होता है।



शनि



शनि द्वादश भाव में

शुभ फल : बारहवें स्थान में शनि होने से जातक की प्रवृत्ति एकांतप्रिय, संन्यासी जैसी होती है। दयालु होता है। भिक्षागृह, कारागृह, दान संस्था आदि से सम्बन्ध रहता है। जातक गुप्तरिति से धन संचय करता है। गुप्त नौकरी, हलके काम आदि से लाभ होता है। शत्रुहंता और कुबेर के समान यज्ञ करने वाला होता है। शनि व्ययभाव में होने से जातक जनसमूह का नेता होता है।

व्ययस्थान का शनि मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु और मीन में होने से वकील, वैरिस्टर, राजनीतिज्ञ आदि विद्वान् होता है।

व्ययस्थान का शनि मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु और मीन में होने से शुभ फल देता है।

अशुभ फल : कातर, निर्लज्ज तथा शुभ कार्य में कठोर बुद्धि होता है। मूर्ख, निर्धन तथा वंचक (ठग) होता है। जातक पापी, हीनांग, तथा भोगों में लालसा रखता है। जातक की रुचि क्रूर कामों में होती है। किसी अवयव में व्यंग्युक्त या किसी अंग के टूटने से सदा दुःखी रहता है। बारहवें स्थान में बैठा शनि व्यक्ति को सन्देहशील और दुष्ट स्वभाव का बनाता है। जातक मांस-मदिरा का सेवन करने वाला, म्लेच्छों के साथ संगति करनेवाला, पापकर्म में आसक्त, पतित होता है। वह कृतघ्न, व्यसनी, कटुभाषी, अविश्वासी, एवं आलसी होता है। शनि द्वादश होने से जातक व्याकुल रहता है। बारहवें भाव में शनि होने से जातक नेत्ररोग या मन्द दृष्टि अथवा छोटी आँखों वाला होता है। बारहवें भाव में हो तो अपस्मार, उन्माद का रोगी, रक्तविकारी होता है। जातक पसलियों में व्यथा वाला होता है। जांघ में व्रण होता है। फिजूलखर्च, व्यर्थ व्यय करनेवाला, खर्च से दुःखित होता है। शनि द्वादशभाव में होने से जातक बुरे कामों में धन खर्च करता है। अपने बांधवों से बैर करने वाला होता है। जातक के स्वजनों का नाश होता है। गुप्त शत्रुओं के कारण प्रगति में बारबार रुकावटें आती हैं। किसी पशु के कारण अपघात होता है। अपने हाथ से ही अपना नुकसान करता है। अज्ञातवास, कारावास, विषप्रयोग, झूठे इलजामों से कैद आदि से कष्ट होता है। शनि से साधारणतः उदास और शोकपूर्ण प्रवृत्ति होती है। जातक लोगों से अपमानित होता है। शत्रुद्वारा पराजित होता है। शनि के द्वादशस्थ होने से जातक दयाहीन, धनहीन, स्वकर्महीन, सुखहीन तथा अंगहीन होता है।

शनि पापग्रह से पीडित और राशि से बलहीन होने से ये अशुभफल तीव्र होते हैं।

पापग्रह साथ होने से मृत्यु के बाद नरकगामी होता है।



राहु एकादश भाव में

शुभ फल : एकादश भाव में राहु अरिष्टनाशक होता है। (3-6-11 स्थानों में राहु अरिष्ट दूर करता है) राहु लाभभाव में होने से जातक का शरीर पुष्ट होता है और दीर्घायु होता है। लाभभाव में राहु होने से जातक परिश्रमी, विलासी, कवि हृदय, धनवान् और भोगी होता है। एकादशभाव में राहु होने से जातक इन्द्रियों का दमन करने वाला होता है। जातक साँवले रंग का, सुन्दर-मितभाषी, शास्त्रों का ज्ञाता, विद्वान्, विनोदी चपल होता है। जिस भी किसी समाज में रहे उसी का अग्रणी बनता है। देश में प्रतिष्ठा होती है। यश प्राप्त करता है। चतुर पुरुषों के साथ मित्रता स्थापित करता है। ग्यारहवें भाव में राहु के रहने से जातक को अनेक प्रकार के लाभ के अवसर मिलते हैं। अपने लाभ और लोभ के प्रति जातक अत्यधिक सावधान होता है। धन तथा धान्य की समृद्धि प्राप्त होती है। ग्यारहवें स्थान पर राहु जातक को धनलाभ कराता है किन्तु धनलाभ के तरीके अनैतिक ही रहते हैं। एकादशस्थान में राहु से म्लेच्छों से धन का लाभ होता है। विदेशियों से धन या कीर्ति मिलती है। वक्ता होकर धन प्राप्त करता है। सम्पूर्ण धन का लाभ होता है। विविध वस्त्रों की प्राप्ति, चौपायों का लाभ और कांचन का लाभ प्राप्त करता है। विदेशियों और पतितों से हाथी, घोड़े, रथ आदि की प्राप्ति होती है। सेवकों को साथ लेकर चलता है। पुत्र सन्तति होती है। पुत्रजन्म का सुख मिलता है। पुत्र सन्तान अच्छी होती है। जातक को राजाओं से मान और सुख प्राप्त होता है। जातक की विजय होती है। मनोरथ पूरे होते हैं। जातक के शत्रु नष्ट होते हैं। प्रताप से शत्रुओं को सन्तप्त करनेवाला होता है। शत्रु भी नम्र होते हैं। जातक के मित्र अच्छे होते हैं तथा उनकी सहायता से जातक का जीवन अच्छा होता है। मित्र ज्योतिषी या मंत्रशास्त्रवेत्ता होते हैं। जातक अधिकारी होकर रिश्वत खाता है किन्तु कानून की गिरफ्त में नहीं आता है। व्यवसाय करे वा नौकरी करे-दोनों ही सफल होते हैं। बड़े भाई की मृत्यु-या इसकी वेकारी से कुटुम्ब का बोझा स्वयं उठाना होता है। 42 वें वर्ष में सहसा धन प्राप्ति सम्भावित होती है। 28 वें वर्ष जीविका का आरम्भ होना सम्भावित है। 27 वें वर्ष में विवाह सम्भावित होता है।

राहु उच्च या स्वगृह का होने से राजा द्वारा आदर पाता है।

राहु स्त्रीराशि में होने से प्रथम सन्तान कन्या, बहुत काल के अनन्तर पुत्र होता है। कन्याएँ अधिक होती हैं। आचार्यों ने प्रायः एकादश राहु के फल शुभ ही बतलाए हैं- ये स्त्रीराशियों में मिलते हैं।

अशुभ फल : ग्यारहवें भाव में राहु होने से जातक मन्दमति, लाभहीन, निर्लज्ज और एक अभिमानी व्यक्ति होता है। जातक बेकार समय बितानेवाला, कर्जा लेनेवाला और झगड़ा करने वाला होता है। धूर्तों का मित्र तथा अनर्थ करनेवाला होता है। स्करों के साथ मित्रता रखता है। जातक की बुद्धि दूसरे का धन अपहरण करने में लगी रहती है। दूसरे के धन को ठगी से हथिया लेता है। रेस, सट्टा, लाटरी में लाभ नहीं होता है। जातक का व्यवसाय ठीक-नहीं चलता, कर्ज रहता है। जातक को पुत्र तथा कुटुम्ब की चिन्ता में कष्ट होता है। राहु एकादश भाव में होने से जातक बहरा (वधिर) होता है। कान के रोग से युक्त होता है। सहसा श्रीमान् हो जाऊँ-इस अभिलाषा से एकादशभावगत राहु का जातक रेस, सट्टा-लाटरी-जूआ आदि में धन का खर्च करता है। इसी आकांक्षा से, अधिकारी होने से अन्धाधुन्ध रिश्वत लेता है और कानून के शिकन्जे में आ जाता है। इसी कारण जातक लोभी परद्रव्यापहारी और बरताव अनियमित होता है- मित्रों से हानि, भाग्योदय में रुकावटें आती हैं।



ॐ

केतु

ॐ

केतु पंचम भाव में

शुभ फल : पाँचवे स्थान में केतु होने से जातक वीर्यवान् अर्थात् बलवान् होता है। अल्प-सन्तति होता है-एक या दो पुत्र होते हैं। पुत्र थोड़े और कन्याएँ अधिक होती हैं। जातक की सन्तति जातक के बान्धवों को प्यारी होती है। गायें आदि पशुओं का लाभ होता है अर्थात् इसे पशुधन प्राप्त रहता है। तीर्थयात्रा या विदेश में रहने की प्रवृत्ति होती है। जातक बड़ा पराक्रमी होकर भी दूसरों का नौकर बनकर रहता है। नौकरों से युक्त होता है। कपट से लाभ होता है। बन्धु सुखी होते हैं। जातक के उपदेश प्रभावी होते हैं। विदेश जाने का इच्छुक होता है।

सिंह, धनु, मीन या वृश्चिक में यह केतु अच्छा सुख या ऐश्वर्य देता है।

उच्च या स्वगृह में स्वतन्त्र और बलवान् केतु होने से राजयोग या मठाधीश होने का योग होता है।

केतु शुभराशि में, स्वगृह में या उच्चराशि में होने से शुभफल मिलता है।

अशुभ फल : पंचम में केतु होने से जातक शठ, कपटी, मत्सरी, दुर्बल, डरपोक और धैर्यहीन होता है। पंचमभाव में केतु से जातक खलप्रकृति, कुचाली और दुर्बुद्धि होता है। जातक मूर्खता भरे कार्य करता है और पछताता है। जातक की बुद्धि दूषित होती है इससे मानसिक व्यथा या शरीरिक कष्ट होता है। अपने ही भ्रमात्मक ज्ञान से-अपनी ही गलती से शरीर में क्लेश होता है। अत्याधिक पीड़ा भी होती है। सदैव दुःखी और पानी से डरने वाला होता है। जातक विद्या और ज्ञान से वंचित रहता है। पाँचवें स्थान में केतु होने से जातक के सगे भाइयों को शस्त्र से अथवा वायुरोग से कष्ट होता है। पंचमभाव में केतु होने से सहोदरों में झगड़ा और वाद-विवाद से कष्ट होता है। भाई-बन्धुओं से पीड़ित जातक मंत्र-तंत्र से भाइयों का घात करता है। पंचम भाव में केतु से सन्ततिहानि होती है अर्थात् या तो सन्तति होती नहीं और यदि होती है तो नष्ट हो जाती है। निरन्तर पुत्र के साथ कलह होने के कारण पुत्रसुख नहीं होता है। पंचम में केतु होने से पुत्र नष्ट होते हैं। वात रोगों से पीड़ित रहता है। जिसके पंचमभाव में केतु हाने से अपने शरीर (पेट आदि) पर शस्त्रघात से अथवा ऊँचे स्थान पर से गिर पड़ने के कारण कष्ट होता है। पंचम में केतु होने से जातक के पेट में वातरोग से कष्ट होता है। पेट में रोग तथा विशाच से पीड़ा होती है।

सोमवार 30 सितम्बर 2002 01:12:00	समयक्षेत्र: -5:30:00	इष्टकाल: 47:21:28
शहर: Guna	समय संशोधन: 0	सूर्योदय: 29 सितम्बर 02 06:15:25
राज्य: Madhya Pradesh	रेखांश: 77°19'00	सूर्यास्त: 29 सितम्बर 02 18:06:34
देश: India	अक्षांश: 24°39'00	अयनांश : -23:53:27 लहरी

टिप्पणियां

PURE UNIVERSE ID : 3400222747